विदूषक का युग

विदूषक की बात पर बुरा क्या मानना
विदूषक जो कहे उसे सुनिए और हंसिए
वह किसी को गाली दे तो हंसिए
किसी का अनादर करे तो हंसिए
किसी को सम्मान दे तो हंसिए
वह किसी बात पर रोए
किसी बात पर मचल जाए
वह खुद एक चुटकुला हो जाए
आप बिना रुके हंसिए।

यह लोकतंत्र उसके लिए एक तमाशा है
यह देश उसके लिए मंच है
संविधान उसके लिए चुटकुला है
इतिहास उसके लिए गोबर का किला है
बड़े भाग्य से वह आप सब को मिला है
इसलिए उसके साथ
बिना रुके हंसिए।

विदूषक जो कहे जो करे जो बताए जो दिखाए
बिना सोचे ताली बजाइए और हंसिए
वह तमाशा दिखा रहा है
आप हंसिए
लोकतंत्र की रक्षा के लिए
रुलाई दबा कर भूख भुलाकर
लगातार हंसिए अविराम हंसिए।

उसकी शैली उसके हाव भाव
उसके पेच उसके दांव
सब पर बारीक निगाह रखिए
उसकी हंसी के कारणों को ना जांचिए न परखिए
सुअवसर है जीवन का कि आप विदूषक युग में हैं
इसलिए जन्म को सार्थक करने के लिए
विहंसिए...
हंसिए हंसिए हंसिए।

- बोधिसत्व, मुंबई

व्यंग्य "युवा नेता"बनने की विधि

नीरज गौड़

कुल लागत/इन्वेस्टमेंट : 15 से 20 लाख !
आवश्यक सामग्री : एक SUV 0 500 दस-बारह लाख की ।
सफ़ेद कलफ लगे कुर्ते-पजामे, सफ़ेद लिनेन के शर्ट पेंट ।
सोने की 2 चेन ।।
सोने की अंगूठी-ब्रेसलेट ।।
2 आई फोन ।।
ब्रांडेड जूते-सेंडिल ।।
ब्रांडेड कलाई घडी ।।
1 चश्मा Rayban का ।।
क्लासिक का सिगरेट पैकेट ऑफर करने के लिए ।।
रजनीगंधा का डिब्बा ।।
4-6 जी हुजूरी करते चेले..
कैसे बनें:
अपने XUV 500 के नंबर प्लेट में नंबर की जगह अपनी पार्टी के झंडे का चिन्ह बनवाये और अपने 4-6 चेलो को अपनी XUV 500 में सदैव बैठा कर रखे।।
* SUV0 500 में बैठ के मोबाइल कान में ही लगा के रखे..
* भले ही आप काले हों और ये वस्त्र आप पर जमे नहीं पर अपनी देह को सफ़ेद कुर्ते-पजामे और सोने के आभूषण से सुसज्जित करे और किसी भी एक बड़ेनेता के इर्द गिर्द परिक्रमा प्रारम्भ करे..
* अपने नेता को प्रसन्न करने के लिए " मंच-माइक-माला" की यथासंभव ज्यादा से ज्यादा व्यवस्थाये करे..
* नेता जी के आगे पीछे घूमते हुए उनकी " सेवा-पूजा" करते रहे, अपने नेता जी के साथ और उनके भी नेता जी के साथ फोटो खिंचवा कर घर एवं अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान में लगावे..
* हर छोटे बड़े कार्यक्रम, त्यौहार, जन्मदिन पर पूरे शहर में फ्लेक्स लगवाये..
* मीडिया के लोगो से सेटिंग कर अपनी फ़ोटो अखबारो में छपाते रहे..समय समय पर अपने क्षेत्र में चतुर्थ श्रेणी के सरकारी कर्मचारियों पर रौब झाड़ते रहे..
* भले ही घर का आटा भी पिसवाने नहीं गए हो पर लोगो से मिलकर उनके काम करे !
* भले माता पिता की रत्ती भर सेवा और प्यार से बात न की हो पर लोगो से हमेशा हाथ जोड़कर और कोमलता से ही बात करे !
* अपने छर्रे तमंचो के छोटे फ़ोटो भी साथ में फ्लेक्स पर लगवाते रहे और नास्ता पानी की व्यवस्था कराते रहे तभी वो आपके आसपास मंडराएंगे !
* भले ही कितने पापी हो और बचपन से मंदिर नहीं गए हो पर समय समय पर धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ और भंडारों में अपनी उपस्थिति और भजन का आयोजन कराते रहे । ध्यान रखें इसमें भी होर्डिंग बाजी जरुरी है !
* भजन आयोजन में भले ही आवाज फटे बाँस जैसी हो पर कभी-कभी भजन भी गायें ।
* मोबाइल के साथ, कभी दाढ़ी में, काले चश्मे में, तिलक लगाकर हाथ जोड़े हुए फ़ोटो फ्लेक्स पर लगाते रहे ताकि जनता हर रूप में पहचानने लगे ।
* प्रदर्शन में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले और ध्यान रखे की पेपर की फोटो और टीवी न्यूज़ में आप ज्यादा दिखे.... इसके लिए थोडा खर्च भी करें ..ताकि आप मीडिया में दिखते रहें !
* रैली में लोगों की गाड़ी में 100 रुपये का पेट्रोल भरा कर नाश्ता पानी करा के रैली में ज्यादा से ज्यादा लोगो को इक्ट्ठा करने की जुगाड़ करे !
* वादे, झूठ और आश्वासन देना सीखे...
लो जी अब तैयार हैं शहर का एक और युवा नेता..
नोट: ये 15 से 20 लाख लागत नहीं इन्वेस्टमेंट है, कोई पद मिलने पर इसका 1000 गुना रिटर्न पक्का है....
एक बार सफलता मिलने पर नेतागिरी आपकी खानदानी जायदाद बन जाएगी।
इसी तरह पैदा होगा एक नेता.....

यह सप्ताह / आदरणीय अभिभावक

ग्रीष्मकालीन अवकाश की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

अगले 1½ माह बच्चे विद्यालय के बंधन से मुक्त होकर घर पर समय बिताने वाले हैं । चलिए कुछ बातों को ध्यान में रखते हैं, जिनसे कि आने वाले 45 दिन बच्चों के लिए कुछ अलग प्रकार से फलदायी हो :-

1. बच्चों के साथ कम से कम 1 वक्त का खाना जरुर खाएँ । उन्हें भोजन का मूल्य बताएँ और किसान की कड़ी मेहनत के बारे में बताएँ और उन्हें भोजन को व्यर्थ करने से रोकें ।

2. उन्हें स्वयं से अपनी थाली धोने दें । इससे बच्चे मेहनत का सम्मान करना सीखेंगे ।

3. उन्हें भोजन बनाने में आपकी सहायता करने दें । उन्हें सब्जी व सलाद बनाने दें ।

4. अंग्रेजी के कम से कम 5-5 शब्द रोज याद करवाएँ एवं एक कॉपी में लिखवायें ।

5. कम से कम 3 पड़ोसियों से मिलिये एवं उनसे अच्छी पहचान बनाइये ।

6. दादा-दादी / नाना – नानी से मिलने जाइए और आपके बच्चों को उनसे खुलकर मिलने दीजिए । उनका प्यार और संवेदनात्मक सहारा आपके बच्चे के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है । उनकी फोटो खींचिये।

कोलंबा कालीधर

7. अपने कार्य करने के स्थान पर बच्चों को ले जाइए , और उसे समझने दीजिए कि आप अपने परिवार के लिए कितनी कड़ी मेहनत करते हैं।

8. त्यौहार मनाना और बाजार जाना बिलकुल न भूलें ।

9. अपने बच्चो में सब्जियों का बगीचा लगाने की प्रेरणा डालें साथ ही पेड़ - पौधों की जानकारियाँ बच्चों के लिए अति आवश्यक है।

10. आप अपने बचपन का एवं अपने परिवार का इतिहास अवश्य बताएँ ।

11. बच्चों को बाहर मैदानी खेल खेलने की अनुमति दें । चोट खानें दें , धूल में रंगने दें । सब ठीक है । उन्हें गिरने दें, और चोट का अनुभव करने दें , नर्म – नर्म सोफे में आरामदायक जीवन जीने से बच्चे आलसी बनते हैं।

12. उनको भी जीव (पक्षी,मछली.....आदि) पालने दीजिये।

13. उन्हें आंचलिक गीत सिखाइये ।

14. अपने बच्चों को T.V., मोबाइल, कम्प्यूटर, और अन्य उपकरणों से दूर रखिए, इन सबके लिए जीवन में बाद में भी समय है ।

15. बच्चों के लिए कहानी की किताबें लायें जिसमें रंगबिरंगे चित्र हों ।

16. बच्चों को चाकलेट, चिप्स, बिस्किट्स, कोल्ड ड्रिंक्स एवं तले भोजन से बचाएँ ।

17. अपने बच्चें की आँखों में देखकर ईश्वर का धन्यवाद करें इस प्यारे उपहार के लिये कुछ ही वर्षों में वे नयी ऊचाईयों को छूएँगे।

18. बच्चों के साथ प्राकृतिक स्थल, पर्यटन स्थल, धार्मिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल पर भ्रमण पर अवश्य जाएँ । एक पालक होने के नाते अपने बच्चों के साथ समय बिताना आवश्यक है।

19.बच्चों को व्यायाम, मैदानी खेल,एवं रूचि के अनुसार कोई नई गतिविधि का पाठ्यक्रम (तैराकी, सुलेख,संगीत) आदि में सहभागिता कराएँ।

व्यंग्य मुर्गी देशहित में अंडे दे रही थी

उसके मालिक ने कहा था-

'' आज राष्ट्र को तुम्हारे अंडों की जरूरत है।

यदि तुम चाहती हो कि तुम्हारा घर सोने का बन जाये तो जम के अंडे दिया करो। आज तक तुमसे अंडे तो लिये गये लेकिन तुम्हारा घर किसी ने सोने का नही बनवाया। हम करेंगे। तुम्हारा विकास करके छोड़ेंगे।''

मुर्गी खुशी से नाचने लगी।

उसने सोचा देश को मेरी भी जरूरत पड़ती है।

वाह मैं एक क्या कल से दो अंडे दूंगी।

देश है तो मैं हूं।

वह दो अंडे देने लगी।

मालिक खुश था।

अंडे बेचकर खूब पैसे कमा रहा था।

मालिक निहायत लालची सेठ था।

उसने मुर्गी की खुराक कम कर दी।

मुर्गी चौंकी। -''आज मुझे पर्याप्त खुराक नहीं दी गई। कोई समस्या है क्या ?''

''देश आज संकट में है। किसी भी मुर्गी को पूरा अन्न खाने का हक नहीं। जब तक एक भी मुर्गी भूखी है मैं खुद पूरा आहार नहीं लूंगी। हम देश के लिए संकट सहेंगे।''

मुर्गी आधा पेट खाकर अंडे देने लगी। मालिक अंडे बेचकर अपना घर भर रहा था।

बरसात में मुर्गी का घर नहीं बन पाया।

मुर्गी बोली- आप मेरे सारे अंडे ले रहे हैं। मुझे आधा पेट खाने को दे रहे है। कहा था कि घर सोने का बनेगा। नहीं बना। मेरे घर की मरम्मत तो करवा दो।

मालिक भावुक हो गया।

बोला "तुमने कभी सोचा है इस देश में कितनी मुर्गियां हैं जिनके सर पर छत नहीं हैं। रात-रात भर रोती रहती हैं। तुम्हें अपनी पड़ी है। तुम्हें देश के बारे में सोचना चाहिए। अपने लिए सोचना तो स्वार्थ है।''

मुर्गी चुप हो गई। देशहित में मौन रहने में ही उसने भलाई समझी।

अब वह अंडे नहीं दे पा रही थी।

कमजोर हो गई थी।

न खाने का ठिकाना न रहने का।

वह बोलना चाहती थी लेकिन भयभीत थी।

वह पूछना चाहती थी-

"इतने पैसे जो जमा कर रहे हो- वह क्यों और किसके लिए? देशहित में कितना लगाया है?" लेकिन पूछ नहीं पाई।

एक दिन मालिक आया और बोला- '' मेरी प्यारी मुर्गी तुझे देशहित में मरना पड़ेगा। देश तुमसे बलिदान मांग रहा है। तुम्हारी मौत हजारों मुर्गियों को जीवन देगा।'' मुर्गी बोली "लेकिन मालिक मैने तो देश के लिय बहुत कुछ किया है," मालिक ने कहा अब तुम्हे शहीद होने पड़ेगा। बेचारी मुर्गी को अब सब कुछ समझ आ गया था लेकिन अब वक्त जा चुका था और मुर्गी कमज़ोर हो चुकी थी, मालिक ने मुर्गी को बेच दिया। मुर्गी किसी बड़े भूखे सेठ के पेट का भोजन बन चुकी थी। मुर्गी देशहित में शहीद हो गई।

(जो आप सोच रहे हैं ऐसा बिल्कुल भी नही है। ये सिर्फ एक मुर्गी की कहानी है। युवा बेरोजगारों, किसानों, मध्यवर्गीय नागरिकों, मजदूरों, गरीबों, कर्मचारियों को और अधिक उन्मादी होकर राष्ट्रभक्ति में बिना चू चप्पड़ किये देशी नेताओ और कॉरपोरेट्स की तिजोरी भरना महान राष्ट्रभक्ति और युगधर्म की कसौटी है। इसपर चलते रहें।)

- साइबर नज़र

फिर भी भक्ति हो तो ऐसी : टुकड़े-टुकड़े गैंग का सरगना कहा तो भी बधाई!

कुछ नहीं हुआ

गोधरा में कुछ नहीं हुआ
गुजरात में कुछ नहीं हुआ
आरक्षण में कुछ नहीं हुआ
राम-रहीम में कुछ नहीं हुआ
पुलवामा में कुछ नहीं हुआ
गढ़चिरौली में कुछ नहीं हुआ
दादरी में कुछ नहीं हुआ
अलवर में कुछ नहीं हुआ
मॉब लिंचिंग में कुछ नहीं हुआ
गाय के नाम पर कुछ नहीं हुआ
सीवर में कुछ नहीं हुआ
बैंक में कुछ नहीं हुआ
सीबीआई में कुछ नहीं हुआ
आरबीआई में कुछ नहीं हुआ
ईवीएम में कुछ नहीं हुआ
ईसीआई में कुछ नहीं हुआ
नोटबंदी में कुछ नहीं हुआ
जीएसटी में कुछ नहीं हुआ
राफ़ेल में कुछ नहीं हुआ
चौकीदारी में कुछ नहीं हुआ

(साइबर नजर)